

કુષ્ઠરોગ ચિકિત્સા.



લેખક અને પ્રકાશક
રાજવૈદ એસ. એમ. રામા.
કુષ્ઠરોગ સ્પેશ્યાલિસ્ટ.
સાંકડી શેરી—અમદાવાદ.

પ્રથમાવૃત્તિ

સને ૧૯૩૦

પ્રત ૫૦૦

સંવત ૧૯૮૭

૦-૨-૦

અમદાવાદ-બી હાયમંડ બ્યુઝિલિ પ્રિન્ટિંગ પ્રેસમાં
પરીખ દેવીદાસ હમનલાલે છાપ્યું.

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
અમદાવાદ
ગુજરાતી કૉપીરાઈટ-સંગ્રહ
૧૫૫૫

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાયિટ વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૧૫૫૬૪ વર્ગિક

પુસ્તકનું નામ કુષ્ઠરોગ ચિકિત્સા

વિષય હૃદય : ૪ શ્લોક : ૫૮ : ૬

अहमदाबाद वैद्यसभाके प्रमुख



वैद्यराज एम. एम. शर्मा

कुरुक्षेत्र, हरियाणा

પ્રસ્તાવના.

યહ આયુર્વેદ શાસ્ત્ર ભારતવાસિયોંકે કષ્ટ દૂર કરને ઓર શરીરકો સ્વસ્થ રખનેકા એક મહાસાગરકી સમાન વિશદ ઓર વિશાલ તથા મહા ગમ્ભીર અમૃતકા ભણ્ડાર હે. દેવાસુર સંગ્રામમે દેવતાઓંને જો અમરત્વ કો પ્રાપ્ત ક્રિયા થા વડ ઈસ આયુર્વેદકા પ્રતાપ થા. ઈસી સુધાસાગરકા રસપાન કરકે પ્રાચીન આર્યગણુ દીર્ઘાયુ ઓર બલવાન હોકર સ્વાસ્થ્યમય જીવનકા સંભોગ કરતે થે. યહ આયુર્વેદીય ચિકિત્સા સમ્પૂર્ણ ચિકિત્સાઓંકી મૂલ હે, ઓર ઈસી ચિકિત્સાકા સમ ભારત તથા અન્ય દેશોમે પ્રચાર થા-ઇસ આયુર્વેદીય ચિકિત્સાકી કહાંતક પ્રશંસા કી જાય. યહ રામબાણુકી સમાન કાર્ય સિદ્ધ કરને વાલી હે, યહ તો સખલી છોટોં બડો કો મુક્ત કષ્ટસે સ્વીકાર કરના પડેગા, હમારી આયુર્વેદીય ચિકિત્સાહી પુરાને આર કઠિન મહા બયાનક રોગોંકે સમૂહકો શમન કર સકતી હે, ઇસમેં કિચિન્માત્ર બી સન્દેહ નહી, ઇસ દેહકે મનુષ્યોંકે સ્વભાવાનુકૂલ ઇસી દેશકી ઔષધિ હે, દુસરે દેશકી કદાપિ સ્વભાવાનુકૂલ નહીં હો સકતી, વરન્ ભારતવાસિયોં કે લિયે ઇસ દેશકી ઔષધિ કસ્યાણુકારી ઓર કષ્ટહારી હેં હી પરન્તુ ઓર દેશોં કે લિયે બી પરમ હિતકારી હે. ઓર આપ યહ નિશ્ચય જન ભેનાકી, ઇસ આયુર્વેદ ત્રિદ્વા કો મૂલ ભારત ભૂમિ હી હે, પીછે ઓર દેશોમે પ્રચાર હુઆ, હિન્દુ રાજાઓં કે સમય કે સમય ભારતવર્ષ મેં સમ્પૂર્ણ વિદ્યાઓંકી અર્થ થી, પરન્તુ જળસે દુર્ભોગ્યવસ્તુ મુસલમાનોંને ઇસ દેશ પર અધિકાર ક્રિયા તખસે પ્રાપ્ત: આયુર્વેદીય ચિકિત્સાકા સમ્પૂર્ણ લોપ હો ગયા, થોડે હી સમય મેં કયા સે કયા હો ગયા, પરમેશ્વર કી ગતી કુજ જાની નહીં જાતી, જળ મુસલમાનોંને અધિક અન્યાય કરના શુરુ ક્રિયા તો પરમાત્માને ભારત સે જીનકા રાજ્ય મારત ક્રિયા, જળ ભારત વાસિયોંકે કુજ દિન ફિર, ઓર નાસાયણુને અપની દયા કી, તો ફિર સે આયુર્વેદ કા પ્રકાશ ભરતખંડ મેં હુઆ, ઓર એક દિન ફિર એસા આવેમાતમ પૂર્વવત્ સમ્પૂર્ણતા સે આયુર્વેદહીકા પ્રચાર હોગા. બન્ધુઓં! આયુર્વેદ કે પ્રાચીન ગ્રન્થોંમે પ્રત્યેક રોગ કે લિયે એક સે એક બઢકર હજારોં પ્રયોગ મૌજૂદ હે ઓર જહાં તક મેરા અનુભવ હે મેં વિશ્વાસપૂર્વક કહ સકતા હુંં કિ ચરક સુશ્રુત વાગ્બટાદિ પ્રામાણિક પ્રાચીન ગ્રન્થોંમે અધિકાંશ પ્રયોગ રામબાણુ કે સમાન અકસીર કામ કરતે હેં ઓર ઇન્હી પ્રયોગોં મેં સે ઇસ સેવકને બી ગુરુ કૃપાસે ઇસ દુષ્ટ વ્યથા કા પ્રયોગ પ્રાપ્ત ક્રિયા હે.

મુજે અપની યૌગ્યતા પર તનિકબી બરોસા નહિ હે. ઓર ઇસમેં ત્રુટિયોં કા હોના તો સ્વાભાવિક હી હે પરન્તુ મુજે ઇસકી જરાબી ચિન્તા નહીં હે, કપોં કિ મુજે વિશ્વાસ હે કિ જળ ગ્રેમ સે વેલ બન્ધુઓં કો યહ તુચ્છ ભેટ સમર્પિત કર રહા હુંં. ઉસકા અનુભવ વે અવશ્ય કરેંગે ઓર હંસમતિસે ઇસકે નિરુપયોગી અંશકો દષ્ટિમયુત કરતે હુએ કેવલ ઉપયોગી અંશકો હી ગ્રહણ કરેંગે. સતિ.

* વેદરાજ એસ. એમ. શર્માએ અમદાવાદ વેદ સભામાં વાંચેલા નિબંધ, વેદરાજ એસ. એમ. શર્મા ખાસ દૃષ્ટિગતના સ્પેષીયાલીસ્ટ છે અને તેમના હાથે ઘણાં દરદીઓને લાભ મળ્યો છે.

कुष्ठरोग.

आरोग्य शरीर संबंधी नीयमों के पालन करते रहनेकी ही अवस्था विशेष का नाम है, इस लिये सुअपूर्वक जीवन व्यतीत करनेकी धृष्ट्या रचनेवाले प्रत्येक मनुष्यको उचित है कि शरीर को लाभदायक और हानिकारक पदार्थों और कर्मोंका ज्ञान प्राप्त कर अहितकर पदार्थों और कर्मोंसे सदा अपनेको अयाता रहे, अन्यथा मिथ्या आहार विहारदि शरीरमें दोषों के साम्यावस्थामें हलयत्र उत्पन्न कर उसीके अनुसार नाना प्रकार के वे रोगोंके कारण बन गइतेहैं जैसे:—

कुष्ठ रोग होने के कारण और निदान.

- (१) दूध भ्रष्टी परस्पर विरुद्ध भोजन करने से.
- (२) दही और दूध परस्पर विरुद्ध पदार्थ आने से.
- (३) पतले बिकने और भारी पदार्थ जल आने से.
- (४) वमन तथा मद्यभूनादि के वेगों को रोकने से.
- (५) अधिक भाकर कसरत (व्यायाम) करने से.
- (६) अधिक भाकर धूप वा आगका अधिक सेवन करने से.
- (७) सर्दी मर्मी लंघन और आहार घनका जितना कमसे सेवन करने से.
- (८) पसीने आये हुये, श्रमसे थके हुये और लक्ष्मसे धलरागे हुये घन तीनों अवस्थामें तत्काल नहाने तथा नलपान करने से.
- (९) अण्डुर्ग में आने या भोजन पर भोजन करने से.
- (१०) वमन विद्वेषनादि पंच कर्मोंका सेवन करते समय कुपथ्य करने से.
- (११) नवीन अन्न दही भ्रष्टी (दूध भ्रष्टी) आदि नमक और अत्यन्त अम्लार्थ सेवन करने से.
- (१२) उडद, भूली, पिष्ठात, तिल, दूध, गुड घनका अधिक सेवन करने से.
- (१३) भोजन के अण्डुर्ग में त्री प्रसंग करने से.
- (१४) दिन में जल सोने से.
- (१५) तिलतैलं कुलिथांश्च, वल्मीकं लिंग मेवच माहिषं दधि वृन्ताकं सप्तैते कुष्ठ हेतवः तिल, तेल, कुन्धी, वल्मीक रोग, विंग रोग (उपदेश आदी, बैंसका दही और वृन्ताक, घन सात काष्ठों से भी कुष्ठ उत्पन्न होते हैं.
- (१६) घनके सिवाय वातरक्त तथा पारद के विकारसे कुष्ठ रोग होता है.
- (१७) घनके सिवाय बालु जमाने के छोटोमोमें आनेसे तथा विदेशी औषधियों के अधिक सेवन करने से कुष्ठरोग दिन या दिन बढ़ता जाता है.
- कुष्ठ की सम्प्राप्ति और संप्रिया घन उपर लिखे हुये कारणों से वातपित्त और कफ ये तीनों दोष कुपित होते हैं, ये कुपित हो कर त्वग्ना, मांस, रक्त व लसीका को दूषित करते हैं. इस प्रकार तीनों दोष और सात त्वग्नादि दूष्य ये सात कुपित होनेसे सात और (११) प्रकार प्रकार के कुष्ठ रोग को उत्पन्न करते हैं.
- कुष्ठ की संप्रिया आग्नादश हैं, घनमें से सात महा कुष्ठ और ग्यारहः सुक्ष्म कुष्ठ हैं.

सात महकुष्ठों के नाम.

कपाल, औद्गुम्भर, मण्डल, सिन्धु, काकलु, कलु, पुण्डरीक और ऋक्षनिर्घृक.

चारह क्षुद्र कुष्ठों के नाम.

ऐककुष्ठ, गजयम, यमह्व, विययिका, विपादिका, पाभा, कच्छ, ह्र, विरशेटक, कटिल और अलस.

कुष्ठ के पूर्वरूप.

जिस जगह कुष्ठ होने को होता है, वह स्थान छूनेसे अत्यन्त चिकना व, अत्यन्त भरभरा भालुम होता है। वहां पसीने अधिक आवें, वा मित्रकुष्ठ नहीं आवे, उस जगह के यमडेका रंग अदृश जय, दाल होय, जुजली हो, त्वचा को स्पर्श करने से स्पर्श भालुम न हो, सुष्ठ युमाने की सी पीडा हो, ददरे हो, भिना श्रम किये श्रम भालुम हो ! प्रलु में अधिक वेदना हो, प्रलु शीघ्र उत्पन्न हो, और अहुत दिन तक रहें, प्रलु के बनने के समय रूपा होता है, अल्प कारणों से कुपित हो जय, रोमांच हो आवे और रुधिर काला हो जय, ये सर्व कुष्ठ के पूर्वरूप है।

किस दोष की उत्पत्तिता से कौनसा कुष्ठ उत्पन्न होता है.

(१) कपाल कुष्ठ वातकी उत्पत्तिता से होता है.

(२) औद्गुम्भर, मण्डल और विययिका पित्तकी उत्पत्तिता से होते हैं.

(३) ऋक्षनिर्घृक वायु और कक्ष की उत्पत्तिता से होता है.

(४) गजयम, ऐककुष्ठ, कटिल, सिन्धु, अलस और विपादिका वात और कक्ष की उत्पत्तिता से होते हैं.

(५) ह्र, शतारु, पुण्डरीक, विरशेटक, पाभा और यमह्व कुष्ठ पित्त और कक्ष की उत्पत्तिता से होते हैं.

(६) काकलु तीनो दोषों की उत्पत्तिता से होता है.

नाम कोट	नाम प्रधान दोष
कपाल	वात
औद्गुम्भर, मण्डल, विययिका	पित्त
ऋक्षनिर्घृक, गजयम, ऐककुष्ठ, कटिल, सिन्धु, अलस, और विपादिका.	वात और कक्ष
ह्र, शतारु, पुण्डरीक, विरशेटक, पाभा और यमह्व	पित्त और कक्ष
काकलु	वात, पित्त और कक्ष

कुष्ठों के लक्षण.

(१) कपास कुष्ठ के त्रय काले लाल रंगे, कटिन और पतली त्वचा वाले तथा नायने सरीणी पीडा सहित होता है.

(२) औदुम्बर कुष्ठ में पीडा दाह वाली और पुण्वी होती है व्याधि स्थान के शोथे पिंगल वर्ण के होते हैं इस कुष्ठका आकार गुलर के समान होता है इसी से इसको औदुम्बर के नाम से कहते हैं.

(३) मण्डल कुष्ठ का रंग कुछ सफ़ेद और लाल रंगका होता है कटिन, गोला, चिकना तथा जिसका आकार मण्डल के समान होता है और ओके दूसरे से भिदा हुआ होता है.

(४) ऋक्षनिर्द्ध कुष्ठ के किनारे लाल हों, भीयमें काला और लाल भिन्ने हुए रंग का होता है, कर्कश पीडा सहित और रीछ की जल की समान आकारवाला होता है.

(५) पुण्डरीक कुष्ठ सफ़ेद कमलके समान भीयमें लाल और किनारे सफ़ेद होता है, कुछ विस्त्राप्त सहित होता है. इसमें कर्क प्रधान है.

(६) सिद्ध कुष्ठ के मण्डल, सफ़ेद और लाल तथा पतले हों, पुण्णनेसे लुसीरी छोटे तुम्भीके फूलकी समान और प्रायः छातीमें होता है.

(७) काकलुक कुष्ठ धुंधली* समान लाल और काले भुज्जवाला होता है तथा पाक और तीव्र पीडा युक्त और तीनों दोषों के लक्षणयुक्त होता है.

(८) आरुह क्षुद्र कुष्ठों के लक्षण ओके कुष्ठ और यर्म कुष्ठ, जिसमें पसीने नहीं आवें जो बहुत जगह में व्याप्त होता है, जो मछली की त्वचा के समान होता है, जिसकी त्वचा हाथीकी यर्म के समान मोटी और कर्कश होता है, सुश्रुत में कहा है कि "कृष्णाहरणं येन भवेच्छरीरं तेदकं कुष्ठं प्रवदन्त्यसाध्यं अर्थात्, जिससे देह काला व लाल पड़ जाता है उसे ओके कुष्ठ कहते हैं यह असाध्य है.

(९) कटिभ कुष्ठ जो कुष्ठ वाली लिये काला जिसमें गोला गोला चकते पड़कर उठने लगें और अत्यन्त पुण्वी होता है.

(१०) विपादिका में पुण्वी जलन और वेदना होती है, जग विचित्रिका पैरोंमें होती है तथा इसे विचित्रिका नहीं परन्तु विपादिका कहते हैं, जोड़ोंमें विवाध कहते हैं.

(११) अलसक जिसमें पुण्वी चकती होता है और लालीयुक्त छोटी तथा गूरी फुंसियें अधिक होता है.

(१२) ह्रुमण्डल जो पुण्वी युक्त और ताम्र त्रण की फुंसियें युक्त होता है, ईशता जग और मण्डलाकार गोला चकते होता है.

(१३) पाभा जिसमें शरीर में पुण्वी चककर छोटी छोटी फुंसियां निकल आवें शरीर और आग जलनेकी सी दाह मालुम पड़े, पिवलरकर और और जगह लगने से वहां भी फुंसियां उत्पन्न हो आवें.

(१४) यर्मह्र कुष्ठ जिसका रंग लाल, जिसमें श्व, पुण्वी और शोडा से युक्त होता है यर्म इत जग और किसी पदार्थ का भी स्पर्श सदा न जग.

(१५) कम्बु कुष्ठ कुंसें, हाथ, पांव पर जो दाहयुक्त छोटी छोटी फुंसियां अथवा गूरी गूरी फुंसियां होता है.

(१६) विरहोदक कुष्ठ जिसमें दोड़े कावे या लाकचम के हो और जिसकी त्वचा पतली हो।

(१७) शलाक कुष्ठ जिसमें लाकच कावे दाहयुक्त अहुतसे पाये दे।

(१८) विचरिका जिसमें पुण्डरी युक्त धूसर रंग का और श्लेष्मयुक्त कुष्ठिकां हो।
सम धातुगत कुष्ठों के लक्षण

रसगत कुष्ठमें रूप कुरूप हो जय, शरीरमें रूपापेन त्वचा शून्य हो जय, श्लेष्मा का होना और पसीना अधिक आवे।

रक्तगत कुष्ठ अगर कुछ भूनमें बला जाता है तो पुण्डरी अहुत बढ़ती है और राव अधिकता से कहे।

भासगत कुष्ठ में मुष्मका अधिक सूचना शरीरमें कंठिता देहमें अधिक पुंसियां हो मुष्म युमानेकी सी पीडा हो और दोड़े हो और स्थिरता होती है।

भेदगत कुष्ठ में दाह टेडे हो जय, यत्रनेमें असमर्थ हो जय, अंग लंग हो जय, धाव द्वेव जय।

अस्थि भग्नगत कुष्ठमें नाकका गेठ जना-आंभे लाव हो जय, धावमें कृमि पूड जय और स्वरलंग हो जाता है।

शुक्रगत कुष्ठमें जय कुछ शुक्रमें प्रवेश करता है, तत्र हाथका गिर पडना यद्यनेकी शक्ति का नष्ट होना, अंगमें पीडा होना, धाव का अत्यन्त बढ़ना शुक्रातवगतकुष्ठ विष और रज में धुसा हुआ कुष्ठ सन्तानको भी काटी करता है यानी काटीके औलाद भी काटी होती है।

कुष्ठ में सताहि होणे की उत्पत्ति वातसे रूपा और लाव होता है।

पित्तसे कुष्ठ अद्भुत आत्मन्त जीवा दाहलावी और आव संयुक्त होता है।

कइसे सईध धन (मोटा) लारी और पुण्डरी युक्त होता है।

जिसमें उपर लिखे दुखे लक्षणोंमें से दो प्रकारके लक्षण हो उसे दो दोष की उत्पत्ति वादा और जिसमें तीनों प्रकार के लक्षण हो उसे तीनों दोषों का उत्पत्ति वादा समझे।

साध्यासाध्य लक्षण

रस, रुधिर और भास में गया हुआ तथा वात और कइ की उत्पत्ति वादा कुष्ठ साध्य है।

भेदगत और दाह कुष्ठ साध्य है। भग्न, अस्थि और शुक्रगत कुष्ठ असाध्य है।

जिस कुष्ठमें कृमि पड जय, वमन और भेदगति आदि उपद्रव हो और नेत्रो-पेतिपन्न हो वह असाध्य है।

कुष्ठमें अरिष्ट लक्षण

जो काद कूटकर बढ़ता हो, जिसमें रोगी के नेत्र लाव हो गये हो या स्वरलंग हो गया हो और जिसमें वमन विरेचनादि कुछ लाभ नही करते वह रोगी भर जाता है।

शिवत्र कुष्ठ के लक्षण

शिवत्र कुष्ठ के शिवत्र होनेका कारण पूर्वोक्त कुष्ठों के समान ही है।

शिवत्र के दो भेद है। किलाश और अरुण।

जन्म स्वित्र रश्मि के आश्रय से रहता है तब किंवाश कहता है और जन्म मांस के आश्रय से रहता है तब अशु कहते हैं।

कुष्ठ और (किंवाश) स्वित्र में भेद कुष्ठ टपकता है पर स्वित्र नहीं टपकता है कुष्ठ जल पित्त और कृत्ति में दोषों के प्रयोग से होता है पर स्वित्र, कुष्ठ के दोष से होता है कुष्ठ रसादि सञ्चलित होता है रहता है परंतु स्वित्र रश्मि मांस और भेद में रहता है कृत्ति कोट और स्वित्र में भेद है।

दोष भेद से लक्षण भेद।

वात से पैदा हुआ स्वित्र किसी कदर लाव होता है और रश्मि में रहता है।

पित्त से पैदा हुआ स्वित्र अन्त में लाव होता है और मांस में रहता है।

कृत्ति से पैदा हुआ स्वित्र सखेद होता है और भेद में रहता है।

उत्तरोत्तर एक से एक भारी है।

स्वित्रकी साध्यासाध्यता।

जिस स्वित्र में रोग काणे हो, पतला रश्मि युक्त तत्काण का नया हो-तथा आगसे जल कर न हुआ हो वह साध्य है, इससे अत्रावा अन्य स्वित्र असाध्य है। निर्वोम स्थान-विज्ञानी हाथ-पैर के तलवों और होठों में पैदा हुआ स्वित्र भी असाध्य है।

कुष्ठ रोगीका संसर्ग निषेध।

मैथुनादि संसर्ग से, शरीर से शरीर स्पर्श होने से, श्वास के मिश्रण से-एक साथ लोभ्य करने से, एक शय्यापर सोने से, कोठी के पहिने हुए कपडे पहिनने से-या उसकी पहिनी हुई मावा के पहिनने प्रत्यादि संसर्ग से निरोगी भी कोठी होता है।

प्रत्येक प्रकार के रोग के द्विजे आयुर्वेदीय ग्रन्थों में औषधियों पृथक् २ और अनेक प्रकार की हैं। उनमें भी अवरुद्धा भेदसे और अलाभ्य विचार कर कम वेश किया जाता है, जे केवल अनुभवों विहित कर सकते हैं। इससे अतिरिक्त अधिकांश औषधियां (जिनमें विष और रसो का प्रयोग है) ऐसी हैं, जिनका तय्यार करना सर्व साधारण के विषे सहज नहीं है और अशुद्ध होने पर लाभ के अद्वे हानि होने का अधिक सम्भावना है।

आजकल हरजंग कलकत्ता आदि अनेक स्थानोंसे सभायार पत्रोंके कागजों में कुष्ठ रोग पर औषधियों के नोटिस दृष्टिगोचर होते हैं। जिनमें कोष्ठ के माह हो वा तीन दिनोंमें आश्रय, कोष्ठ तीन बार लगाने से ही आश्रय, कोष्ठ जल की तरह रोग लगाने आदि का दावा करते हैं। और कोष्ठ मुक्त दवा तक देते हैं। इन नोटिसवाले नेही लोगों का विश्वास इस पुष्पमय आयुर्वेद परसे उठा दिया है।

प्रसंगवशात् अन्य रोग जे संसर्ग से होते हैं उनको भी लिख देता हूं। जैसे उप-दंश, ज्वर, विशुद्धिका-यक्ष्मा, आंख का दुःखना-मण्ड, श्लेष्म, शीतला इनके समान अन्मान रोग भी एक दूसरे के शरीर में घुस जाते हैं। अतः जैसे रोगियोंसे सदा अथवा याहिये।

कुष्ठ चिकित्सा में याद रखने योग्य निबन्ध कुष्ठ के पूर्व रूप नजर आते ही धवाज शुरू करना चाहिये। कथों के जन्म इससे रूप पूर्ण तौर से प्रकाशित हो जाते हैं, तब धवाज करना महा कठिन हो जाता है।

यह रोग अलिप्त सङ्गमक है. अतः कुछ रोगी के साथ येन्द्र, उल्लस निश्वास अपने अन्दर आने देना, उसके कपडे पहनना, उसके साथ आना, मैथुनदि निरोध स्त्री पुरुषों को धनसे अथवा आहिये और ध्वान् कर्ता वैद्यको भी उपयुक्त साधन रह कर ध्वान् करना आहिये. और कुछ रोगी को आस कर के अकान्त स्थानमें ही रख कर ध्वान् करना आहिये.

वाताधिक्य कुछ रोगी को पहिले ही पिबाना आहिये, कफाधिक्य कुछ रोगी को वमन कराना आहिये और पित्ताधिक्य कुछ रोगीको विरेचन और रक्त मोक्षण कराना आहिये.

दोषों का शोधन क्रम.

प्रति पक्ष में वमन कराना आहिये.

प्रति मांस में विरेचन देना आहिये.

तीसरे दिन नष्य देना आहिये.

और छठे महीने में इस्त भुजा कर थोडा रक्त निकलवाना आहिये और समय समय पर धृतपान कराना इस कुछ रोग में अत्यन्त हितकर है.

कुण्ठीके कर्तव्य कर्म.

कुण्ठ रोगी हर आठवें दिन रात्र तथा नये कटवाता रहे. हित औषधि सेवन करता रहे और स्त्री संसर्ग मांस और मदिराका परित्याग कर देत्वग दोषको वृजितकर्म, इस मनुष्य की त्वयामें दोष हो गया होवे, उसको धृतने कर्म छोड देना आहिये. मांस, वसा, दूध, दही, तैल, कुलथी, उडद, निष्पाव, धूपके विकार, गुड-शकर आदि विरुद्ध भोजन, अध्यशन, अशुष्क, विहाही और अलिप्तदि दिनमें सोना और अरत कुस्ती करना धृत्यादि.

त्वग्दोष में कर्तव्य कर्म.

शाण्णी यावेल, सांडी यावेल, जै, जेहूँ, डारदूय, उदालक आदि नक्ति अन्न का भोजन करे, भूंग अथवा अडहर में से किसी ओके के त्वय अथवा दावके संय भोजन करे. मरुदूकपल्ली, आवयी, अडसा, वायविडंग और आक धनके दूधोको ही में पकाकर अथवा सरसों के तैल में पकाकर अथवा तिकत वर्ग के साथ भोजन करे. नीमके पते अथवा मिखावां का मिखाकर भोजन करे. इस मनुष्य को मांस अलुतही अनुकुल होवे उसको जंगली एवं का मांस भेदारहित देवे और अक्षय के दिये वृक्ष तैल, उत्सान के दिये आरग्वधादिका कवाथ देवे-पीने परिये और अवगाह में घेर का कवाथ देवे यह कुछ रोग में आहार और आचार का नियम है.

कुण्ठ चिकित्सा.

वात कुण्ठकी चिकित्सा:—प्रथमही रोगीको स्नेह पान से शुद्ध करे फिर मेस-सिंगी, गोमर, काकजंघा, गिलोम और दशमूष धनसे सिद्ध किया हुआ तैल अथवा ही पान और अभ्यंगमें देता रहे.

पित्त कुण्ठ की चिकित्सा:—क्षय अश्वकण्ठ, अश्वनदाक, नीम, पित्तपापडा, सुलहरी, क्षोष और मण्ड धनसे सिद्ध किया हुआ ही पित्त जनित कुण्ठ में हित है.

कई अनित कुष्ठ चिकित्साः—चियाव, शाल, अभसतास, नीम, सातवा, चित्रक
कभी चित्रक वनं और कुठ धनसे सिद्ध किया हुआ भी कई अनित कुष्ठ में हितकारी है।

त्रिदोषण कुष्ठकी चिकित्साः—लिखावा, हरड और वायविडंग धन तिनों से सिद्ध
किया भी त्रिदोषण कुष्ठों में देना अत्यन्त हितकर है कुष्ठों में अन्य प्रयोग।

मिलाकर.

(१) हरड, त्रिकुटा, गुड, तैल, धन सभको यादने से कुष्ठ रोगमें शायदा होता है।

(२) आंजवा, हरड, जहेडा, वरी पीपल, वायविडंग, सहत धी सभको मिलाकर
यादने से कुष्ठमें अवस्थयी शायदा होता है।

(३) एक माह तक साह हलदी आर तोवा दररोज गोमूत्र के संग पीने से कुष्ठ
जता रहता है।

(४) चित्रक को गोमूत्र के संग मलिन पिसकर सेवन करनेसे कुष्ठ आराम होता है।

(५) पीपल को मलिन पिसकर गोमूत्र के संग पीने से कुष्ठ में अवस्थ शायदा होता है।

(६) रसोतको गोमूत्र के साथ पीने तथा धसीका कुष्ठपर लेप करने से कुष्ठ रोग
नष्ट होता है।

(७) नीमकी छाल, सातवा, मोथा, दोनो हल्दी, दोनो पंचमूल, मज्जठ,
त्रिदोष, अड़सा, चित्रक, देवदार, त्रिकुटा और वायविडंग धन सभको समान भाग लेकर
कपडछान करके चूर्ण कर लें। धसूमें से प्रतिदिन जवा के अनुसार पानसे कुष्ठ अवस्थ
ही जाता रहता है।

(८) त्रिदोष धूतमें त्रिकुटा मिलाकर पानसे कुष्ठमें आराम होता है।

(९) गोमूत्र में जहेडे के साथ सिद्ध किया हुआ धी सेवन करने से कुष्ठ अवस्थ
मेव भिदता है।

(१०) निसोथको सहत के संग पानसे कुष्ठ को नाश करता है।

(११) कर्दमर, और गूलर धी ७५ धनको समान लेकर गूलर की जड़ के साथ
क्वाथ कर के पीवे धससे पुण्डरीक में अवस्थ ही शायदा होता है।

(१२) जटनी के दूधमें भीर पनाकर लम्बी मुहत तक सेवन करने से कुष्ठ रोग
नाश होता है।

(१३) जटके मूत्रमें वायविडंग मिलाकर सेवन करने से अवस्थ कुष्ठ नाश होता है।

(१४) भावयी दो भाग, त्रीदोषा एक भाग दोनो को मिलाकर कपडछाणु कर
गोमूत्र के साथ सेवन किया जाय।

(१५) गिलोयका क्वाथ या उसी क्वाथमें सिद्ध किया हुआ धी प्रतिदिन प्रातःकाल
सेवन किया जाय।

(१६) भरसारका चूर्ण अथवा भरसारका क्वाथ अथवा भरसारके क्वाथमें सिद्ध
किया हुआ एकरीका धी प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन कराने से कुष्ठमें अवस्थ लाल होता है।

जब कुष्ठ रोगी के सम्पूर्ण दोष दूर हो जाय तब भर के क्वाथ से रनान करावे
और भरसार के जल से धी सिद्ध किया हुआ यवागू पिडावे।

(१७) कडे तैलमें शुद्ध गंधकका मूल्या डालकर धूपमें जरा भर्म करके पान और भर्जन करने से आमा कुष्ठ अवस्थ नाश होता है. कमसे कम ४ दिन सेवन करना चाहिये. इस पर दूध युक्त भातका भोजन करे.

(१८) गोरामुण्डी का शुभ दिन लाकर छायामें सुभावे द्वि कपडछान कर रजक तोला गाय के दूध के साथ ४० दिन तक अथवा तो एक वर्ष तक आमा कुष्ठ रोग अवस्थ नाश करता है.

(१९) थूहरका दूध आधा शेर, जूने अने प तोला एक में मिश्रण भरल कर अने परापर गोली बनावे, गदित कुष्ठवाले का पत्र देभकर एक वा दो गोली सेवन करावे.

(२०) रुद्रवन्ती का रविवार और पुष्य नक्षत्र के दिन पत्ता सहित छिपाड लावे, छायामें सुभाय, यूर्ण करके द्वि भसमें से प्रतिदिन प्रातःकाल में घृतमधु न्यूनाधिक लेके सेवन करे, इसके छूर्ण होने पर दूध पान करना चाहिये—भसका सेवन करते समय नमक पन्ह करना चाहिये.

(२१) योपय्नीनी या वृक्षराज का यूर्ण कर छतना ही पैरसार का यूर्ण मिश्रकर प्रातः और सन्ध्या के सहत में मिश्रकर खाटे. भसमें ली लवण पन्ह है. कुछ समय तक सेवन करना चाहिये.

(२२) सुवर्णपत्री या सनाप का साइ करके कपडछान करके यूर्ण करे, भसके वजन का चौथा हिस्सा योपय्नीनी लेवे, दोनों का मिश्रकर सवेरे तथा शाम के अथवा इकत शाम ही के कमसे कम ६ माथा एक एकत लेना चाहिये, उपर गौ का दूध पीवे. अधिक समय सेवन करने से बाल होता है.

(२३) नीम, लिहावा, वायविडंग, अदिर और आवयी छिप्राका पांयो औषधि भस कुष्ठ रोगका नाश करने में रामभाष्य काम करती है.

(२४) नीम के गुल्य आप सर् अन्धुवर्ग अग्नि तरह से जनते है. भस कुष्ठरोग का मिटाने में अडाही उपयोगी नजर आया है.

(१) नीमका पंथांग—छाल, पत्ते, दूधइल और जड इनको नीमका पंथांग कहते है. इस पंथांग का समान भाग लेकर, छायामें सुभावे द्वि कपडछान कर यूर्ण कर ले. द्वि भसमें से पत्रके अनुसार घी, सहत, गोभूत, जल, आमलोंका क्वाथ अथवा दूध के साथ सेवन करना चाहिये. यह नीम पंथांग उत्तम रसायन है.

(२) प्रतिदिन प्रातःकाल नीमका पत्ताका यूर्ण और आवयोंका यूर्ण मिश्रकर सेवन करने से कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है.

(३) नीमका भट्ट शुभ दिन देभ कर पहिले कुष्ठ रोगी का वसन विरेचनादि कम यथाविधि कराकर ३ मासा सवेरे तथा ३ मासा शामके उत्तम शुद्ध मधुमें यटावे, भोजन के पहिले सेवन कराया जाय. और इसीका (भट्ट) प्रक्षोपर लगाया जाय. ३-४ मास तक सेवन करने से कुष्ठ का नाश होता है.

(४) निम्ब स्वच्छा कृतः कषायः सर्व कुष्ठ रोगनाशनः नीमकी अन्तरछाल का क्वाथ करके तीन अथवा ६ माह तक परापर पिनेसे समस्त कोट नाश होते है.

(५) नीमकी निम्बोलीका तैल कुष्ठ के धाव पर लगाने से अत्यन्त हावडा होता है.

(२५) अमृत लवलातक प्रयोगः—शुद्ध लिखावे २५६ तोला १०२४ तोले पाणीमें पकावे, जल यतुर्थाश आकी रहे, तब कपड़े से छान कर ठंडा करके २५६ तोले दूध मिलाकर पकावे, जल यतुर्थाश आकी रहे तब गरागर का घृत मिलाकर पकावे. जल घृत मात्र रहे जल तब अर्ध जल शकर मिलाकर अच्छी तरह मथ कर सात दिन पका रहने दे, फिर सात दिन आठ प्रातःकाल शौयादि से शुद्ध हो कर २ भासा अथवा शैगी के अलके अनुसार सेवन कराया जय. इससे गलीत कुष्ठमें अलुत क्षय हो जाता है.

(२६) जिसके अंग को कीड़े आ गये हों उसको कनेरकी जड़ पीस कर लगावे. कुष्ठ अथवा उपदंशका घाव कनेर की जड़को घिसकर लगाने से शीघ्र ही अच्छा होता है.

(२७) वायविडंग को गोमूत्रमें पीसकर लगावे, गोमूत्र से घाव घेता रहे और गोमूत्र शैगीको पिलाते रहना चाहिये.

(२८) नीला बोथा, हरताल, कुटकी, त्रिकुटा, लास संलग्ना, कनेर, कूट, आवयी, थूहर, बोध, नीमके पत्ते, पीलू के पत्ते और अमलतास के पत्ते पाणी अथवा गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से कुष्ठ नाश होता है.

(२९) वायविडंग, कनेर, दोनो हल्ली, और दोनो कटेरी, इनको पीसकर लेप करने से श्वित्र नाश होता है, (श्वित्र नाशक अनुबूत प्रयोग).

(३०) कंण, आकके फूल, थूहर, अमलतास और अमेली के पत्ते इन सभको पत्ते गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से श्वित्र, दद्रु, वक्ष ये सभ नाश होते हैं.

(३१) श्वेत अपराजिता की जड़को उसीके रसमें पीसकर लेप करने से श्वित्र कुष्ठ नाश होता है.

(३२) भंडाय, पुमांडके बीज, कूट, पीपर, इन सभको गरागर लेकर, अकर के मूत्रमें पीसकर लेप करने से श्वित्र कुष्ठका नाश होता है.

(३३) करंज, आक, थूअर, और अमलतासके पत्ते दूध सभको गोमूत्रमें पीसकर लेप करे, श्वित्र को मिटाता है.

(३४) सरल देवदार को पीसकर श्वित्र पर लेप करने से मिटता है.

(३५) पाययी ओक तोला और हरिताल ४ तोला इनको गोमूत्रमें भूय भरल कर लेप करने से श्वित्र कुष्ठ नाश होता है.

(३६) सईद अरनीकी जड़को रवि पुष्पको बाकर दुधमें पीसकर पीने से श्वित्र को मिटाता है.

(३७) चिरमिडि के बूखुं को पानीसे मलिन पीसकर लेप करने से श्वित्र मिटता है.

(३८) मनशिक्ष और डंभा भरभको पानी में पीसकर लेप करने से श्वित्रका नाश होता है.

(३९) आवयी और कासे तिल इनका कट्टे अनाकर वर्षावर नियम से आने से तीव्र श्वेत कुष्ठ भी अवश्य मिटता है.

(४०) आवयी का बूखुं ओक तोला भर सदात के संग अथवा तो बरभ जलके संग सेवन करे और घामका सेवन करे, दूध और घी आता रहे, श्वित्र कुष्ठ अवश्य ही नाश होता है.

(४१) घूँघरू, कुट, चित्रक की जड़ और वय घनका नीमके रसमें मथवा कांछमें पीसकर लेप करने से स्वित्रका नाश होता है.

(४२) आवयी, शिलाजित, अंगकुरम और चित्रक की जड़ घनका पीसकर लेप करने से स्वित्रका नाश होता है.

(४३) दारुहर्दी और गूलर की मूलकी छात्रको पीसकर लेप करने से स्वित्र मिटता है.

(४४) आवयी १६ तोला, हरिताल ४ तोला, मनशिश ६ भासा, घूँघरू ६ भासा और चित्रक की जड़ ६ भासा घन सज्जको गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से स्वित्र कुछ नाश होता है.

(४५) छाथीदांत के साथ भावतीका क्षार पीसकर लेप करने से स्वित्रका नाश होता है.

(४६) कुत्तेकी हड्डी, डेलके क्षार, और कौआकी विष्ठा घन सज्जों में मिलाकर लेप करने से स्वित्र मण्डल में उग्र रक्त कुछ भी नाश होता है.

(४७) बोहयूथु, काले तिल, रसोत, आवयी और आंवले सज्जको लांगरे के रसमें पीसकर लेप करने से स्वित्र कुछ आराम होता है.

(४८) आवयी के यूरुमें अहरणका रस मिलाय लेप करने से उग्र जन्म हुआ कुछ भी नाश होता है.

(४९) मुण्डी के रसका शरीरपर लेप करने से सर्व कुछकी मथ्या दूर होती है.

(५०) जेरभमुण्डी के यूरुको रात्रे पाणीमें मिला कर सवेरे आगे में लगाने से वाक् काणे होते हैं.

रस माण्डिक्यम.

(५१) अक्षपत्री हरिताल का पेठे के रसमें अर्धे हठी में सात २ बार शुद्ध करे, फिर छसके छोटे २ टुकड़े कर ले, पश्चात् छसको एक सिंकोरे में रणकर छपरसे दूसरा सिंकोरा ढंक भेरीके पत्तों का लेप कर देवे, फिर सुष्माकर आंख में रण दे जन्म तक लाल न हो जन्म तथतक पकावे, जन्म शीतल हो जन्म तथ अन्धर से रसको निकाल ले. मात्रा दो रती वी सड़त न्यूनाधिक में देवे. पथमें अनेकी रौटी, शक्कर, घी देवे.

तालकेधररस.

(५२) हरिताल का यूरु कर पमाड और सुगंध वाले के रसमें भरल कर के पुटपाक करे, फिर ओक दूध हांड़ी में छस औपधि को भरकर छपर और नीचे ढाक घी भरम रणकर दिन रात पकावे, जन्म सईद हो जन्म और अग्नि में डालने से धूँआन निकले तथ उसका सर्व रोगों प्रयोग करे, छसमें भरल तथा अने की रौटी का पथ है.

उदयलारकर रस.

(५३) गंधक से भारा ताँप्पा १० लाग, मिरय ५ लाग, भीड़ा तखिया २ लाग घनका यूरु कर अनुमान मुवाहिक जाने से सर्व कुछ नाश होते हैं.

हरिताल रस.

(५४) सवि पुष्प को रनान कर अक्षपत्री को छिपाड लावे, फिर छसकी लुगदी कर उसमें शुद्ध वंशपत्री हरिताल रणकर मुलतानी मिट्टीसे कपड मिक कर के सुष्मावे, फिर

ખાંચ સેર ઉપલો ફૂંક દે, એક હી આંચમે શ્વેત ભસ્મ હોગા. ઇસકો પ્રમાવિધિ અનુપાન મુવાદિક સેવન કરને સે સર્વ કુષ નાશ હોતે હૈ.

હરિતાલભસ્મ વિધિ ૨.

(૫૫) હરિતાલ શુદ્ધ તોલા એક કો ઇન્દ્રાયણ કે એક ફલ મેં રખકે ચાર કપડ-મિટ કરકે સુખાય લે ફિર સવાસેર આરને ઉપલોં મે ફૂંક દેવે ઇસી તરહ ઇકવીસ ઇન્દ્રા-યાકે ફલોં મેં ફૂંકે. સેવન કરને સે સર્વ પ્રકારકા કુષ મિટે.

હરિતાલભસ્મ ૩

(૫૬) શુદ્ધ હરિતાલ ૨ તોલા કો ઘી કુંવાર કે રસમેં દો દિન ખરલ કરે, ટિકિયા બાધિ સુખાય લે સન કે પતોં કી લુગદીમેં રખકર કપડમિટ કરકે ૩ સેર કન્ડોં મેં ફૂંક દે, ભસ્મ હોગા. અનુપાન મુવાદિક સર્વ કુષોં કો હટાતા હૈ.

શ્વેતાદિસ.

(૫૭) શુદ્ધ પારા ઓર શુદ્ધ ગંધક, ત્રિકલા, ભાંગરા, બાવંચી, ભિલાવાં, કાલે તિલ નિખોલી, યે સય સમાન ભાગ લે, ભાંગરા કે રસ મેં ખારખ્યાર ભાવનો દેકરે સુકાતા રહે, એસે ઇકવીસ દિન તક કરકે પીછે સુખાય કર ખુબ ખરલ કરે, ખોરાક ૩ રતી રસકો સહત ઘી ન્યુનાધિક મેં મિલાકર ચાટને સે શ્વેત કુષ કો મિટાતા હૈ.

(૫૮) સુવર્ણ માલિક ભસ્મ કો બદ કે અનુસાર રોગીકો સહત કે સાથ દેવે, ત્રિકુટા ઓર વાયવિંડગ બી જરા મિલાવે પથ્થ સે રહે, નમક બન્દ કર દે-કુચથી ન ખાય-ગેદૂ અને કી રોટી ઘી દૂધ કે સાથ ખાય.

(૫૯) શિલાજીત શુદ્ધ કો ૨ માસા ગોમૂત્ર મેં હરરોજ સવેરે સેવને કરે. કરોમ વર્ષ દો વર્ષ તક તો યહ પ્રયોગ કુષકો અવશ્ય મિટાતા હૈ.

(૬૦) સહતકો બાસી જલમેં મિલાકર પાન કરને સે કુષ જન્મ અન્તદાહ દૂર હોતી હૈ.

વજ્રતૈલમ.

(૬૧) સાતલા, કંજ, આકકે ફલ, માલતી, કનેર, ચૂદરકી જડ, સિરસકી જડ, ચિત્રક કી જડ, સારિવાકી જડ, વિષ, કલિહારી, અમ્રક, હીરાકસીમ, હરિતાલ, મનશિલ, ત્રિકુટા, ત્રિકલા, દોનો હલ્દી, સફેદ સરસોં, વાયવિંડગ ઓર પવાંડ ઇન સય કો ગોમૂત્ર મેં પીસ લે ઇનસે ચોષાઈ તૈલ મિલાકર તૈલ કી વિત્રિ સેં તૈલ પકાવે ઇસીકો વજ્રતૈલ કહતે હૈ.

કૃષ્ણ સર્પ તૈલ.

(૬૨) મરેહુએ કાલે સર્પ કે શિર, કૂછ આન્ત ઇનકો છોડકર બાકી અંગોકો પાત્ર મેં રખકર એસી વિધિસે જલાવે કિ જીસમેં ઘુંવા પાત્રસે બાહિર ના નિકલે, જુબ ભસ્મ હો જય તય ઉસમેં બાવંચી કો તૈલ મિલાકર સિદ્ધ કર લે. શરીર પર માલિશ કરનેસે બાલિત કુષ કો નાશ હોતા હૈ.

(૬૩) કરવીર તૈલ—સફેદ કનેર કો પંચાંગ ઓર વિષ મિલાકર ગોમૂત્ર મેં લુગદી કરકે તૈલકી વિધિ સે તૈલ પકાવે, લેપ કરને સે કુષ રોગ નાશ કરતા હૈ.

कुष्ठ रक्षस तैल.

(६४) पारा, गंधक, इट, सप्तपर्णी, चित्रक, सिन्धूर, लहसुन, हरिताल, आवयी, अभयतानाश के कील, ताम्रजल, मनशिल, सय अकेक तोला लेवे कडुवा तैल उर तोला भिवाकर धूपमे धरि सिद्ध करे, भाविश करने से कुष्ठ रोग को नाश करता है.

(६५) काले सर्प के अन्तर्धूमकी रीतिसे जलाकर जलम बना लेवे-और जले के तैल निकाल कर दोनो का अच्छी तरह भिवाकर लगाने से श्वित्र तथा सर्प कुष्ठों को दूर करता है.

श्वित्र पंचानन तैल.

(६६) कडवा तैल ४ सेर कवाथ के बिये जौमूत्र, इलीका तोड गायका दूध, और भकरीका दूध प्रत्येक चार चार सेर कडक के बिये अरुण्ड के पील, तुलसी के पील, आवयी, पभार के पील, कडवी तुरीया के पील, पीपल, अंकोल, मनशिल, क्षीराकसी, हरडे, कूठ और वायविडंग ये सय अके सेर धन सयको अकेत्र कर पका ले, इस तैलका भाविश श्वित्र पर करने से नाश होता है.

उन्मत्ततैलम.

(६७) धतूरे के पीले का कडक और मानकन्द के क्षारका जलद्वारा कडवा तैल पका कर लेप करने से क्षुद्र कुष्ठ मिटते है.

भस्त्रिचं तैलम.

(६८) काली भिरय, निसोत, कूठ, हरिताल, मनशिल देवदारु, दोनो हल्दी, आलु, अंजन, धन्नायल, आकका दूध और गोबरका रस प्रत्येक अके अके तोला, विष २ तोला, तिलका तैल ४ तोला, कडवा तैल धन सयोंका आठवा भाग जौमूत्र में पकावे, जय तैल मात्र २६ जय, तय ठंडा करके इसका भाविश श्वित्र तथा कुष्ठों पर करने से नाश होता है.

सोमराज तैलम.

(६९) आवयी, दोनो हल्दी, सरसो, कूठ, करंज के पील, पभाड के पील, अभय-तास के पत्ते, धन सयों का कडक के द्वारा सरसो के तैल को पकाकर प्रलेप कर ले.

(७०) आवयी के पीले को पीस कर भाजल तथा सहत में भिवाकर तडके अनुपान के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ मिटता है.

(७१) आरुण्यवादि तैलम - अभयतानाश धाय के पुल, इट, हरिताल, मनशिल, दोनो हल्दी, धनमें तैलको सिद्धकर के लेप करने से श्वित्र शीघ्र ही नष्ट होता है.

(७२) हाथीकी लीह (विष्ठा) की जलम उर सेर लेकर हाथीके मूत्रमें २१ बार नितारकर छान लेवे वह क्षार जल ६४ सेर लेवे फिर उसमें ६ सेर आवयी को भिवाकर पकावे जय पकते पकते गढा हो जय तय उत्तरकर गोलीयां बना लेवे, पानीमें भिसकर लगाने से कुष्ठ और श्वित्र दोनो को नष्ट करता है.

(७३) सोमराज तैल.

आवयी १६ तोला, औरसार ४ तोला, परवणजी ७४ अके तोला, हरडे अके तोला,

બહેડા એક તોલા આંવલા એક તોલા, ધમાસા એક તોલા ઔર કુટકી ૧ તોલા ધન સમકો પાનીકે સાથ પિસકર ૮ તોલા શુદ્ધ ગુગુલુ મિલા દે ફિર કંઈકસે ઔગુન ઘી, ઘીસે ઔગુના પાની તથા ઉપરકી લુગદી સમોકો એકકર મંદામિ સે પકાવે જમ ઘીમાત્ર રહ જમ જાન લો ઇસકે સેવન સે રિવતકો શીઘ્ર હી નષ્ટ કરતા હૈ.

(૭૪) પગ-ચતિકાધૂત-નીમ, પરવત, કુટકિ ગિલોચ ઔર અડસા ધન સમકો ૫-૫ તોલા લેકર ૨ સેર પાનીમે કવાથ કરના, જમ આધાસેર પાની રહ જમ જાન લો, ફિર આધા-સેર ઘી ઔર આધા સેર ત્રિફલા કી પિસી હુર્મ લુગદી મિલાકર પકાઓ, જમ ઘી માત્ર રહ જમ જાન લો ઇસમેસે એક યા દો તોલે નિત્ય ખાને સે સર્વ કુષ્ઠમે લાભ હોતા હૈ.

લઘુમંજુષાદિ કવાથ.

(૭૫) મંજુઠ, હરડે, બહેડા, આંવળા, કુટકી, વચ, દેવદાર, હલ્દી, ફૂટ ઔર નીમ ધનકા કાઠા બનાકર નિત્ય પિનેસે સમ તરહકે કુષ્ઠ આરામ હોતે હૈં.

(૭૬) બૃહ-મંજુષાદિ કવાથ, મજુઠ, કુટકી જાલ, ગિલોચ નાગરમોથ, બચ, સોંઠ, દોનો હલ્દી, કટેરીકા પંચાંગ, નીમ, પરવત, કુટકી, ભારંગી, વાચવિડંગ, ચીતા, ચૂરનહાર, દેવદાર, બાંગરા, પીપર, ત્રાયમાણ, પાઠ, શતાવર. ખેર, હરડે, બહેડા, આંવળા, ચિરાયના, બકાન, વિજયસાર, અમલતાસ, કુન્નપ્રિયંગુ, આવચી, લાલચ-દન, બરછા, દત્તી, સિહોડા, પિતપાપડા, સારિવા, અતીસ, ધમાસા, ઇન્દ્રાયણ, ઔર સુગંધવાલાં ધન સમકા કાઠા પીનેસે પુરાને ચર્મવિકાર, ૧૮ પ્રકારકે કુષ્ઠ, વાતરકત વિગેરે નાશ હોતે હૈં.

એક વિશત્તિક ગુગુલુ—

(૭૭) ચિત્રક, ત્રીફલા, સોંઠ, પીપલ, જીરા, કલોંજ, વચ, સેન્ધવ, અતીસ, ફૂટ, ચમ્બ, ઇલા-ચચી, જવાસા, વાચવિડંગ, અજમોદ, નાગરમોથા ઔર દેવદાર ધન સમોકો બરાબર લેકર પીસ કપડજાન કર, ફિર સમકી બરાબર શુદ્ધ ગુગુલુ લેકર ઇસમે મિલા દો, ઘી કાલકર ખૂબ ઘોટાધુટ જાને પર-દો-દો-માસકી ગોલીયાં બના લો, પ્રતિદિન પ્રાતઃકાલ ગરમ પાણી કે યા દૂધકે સાથ અગ્નિચક્રે અનુસાર સેવન કરે, સર્વ પ્રકારકે કુષ્ઠોકો નાશ કરતા હૈ.

આરગ્વધાદિ કવાથ:—

(૭૮) અમલતાસ, મૈનફલ, કકોટી, કુડા, પાઠ, ખેરપાઠર, મૂખા, ઇન્દ્રની, સમવર્ણી, નીમ, દોનો પિયાવાંસે, ગિલોચ, ચિત્રક, કાકજંધા, દોનો કંજે, પરવળ, ચિરાયના ઔર કરેલા-ધન સમકો સમાન ભાગ લેકર કવાથ ક્રિયા જમ, સેવન કરને સે કુષ્ઠ રોગકો નષ્ટ કરતા હૈ.

ગંધક રસાયનમ

(૭૯) શુદ્ધ ગંધકો ગૌકે દૂધકી ભાવના દેકર ચતુર્જાત, ગિલોચ ત્રિફલા, સોંઠ ઔર બાંગરા ધનકે રસકી અથવા કવાથકી આઠ આઠ ભાવના દે, ફિર અદરખ કે રસકી આઠ ભાવના દેવે, ફિર સુખામ કે બરાબર કી મિશ્રી મિલાવે. તો યહ ગંધકરસાયન સિદ્ધ હોતા હૈ. ઇસમે સે ૧ તોલા નિત્ય સેવન કરે તો મનુષ્ય વીર્ય, પુષ્ટી, હલ્દેહ, દીપ્તગિયાન લો, ઔર કુષ્ઠ, ખુજલી, ઘેર અતિસાર, સંગ્રહણી, વાતરકત, શ્લશ, જીર્ણીકર, પ્રમેહ ઔર વાતકે સર્વ વિકાર મિટે.

(૮૦) કુષ્ઠિનાં વિષજુષ્ઠાનાં કોષિનાં મધુમેહિનામ્ ।

વ્રણાઃકૃત્ત્રેણ સિદ્ધયન્તિ લેપાં ત્વાપિ વ્રણેવ્રણાઃ ॥

કુષ્ઠરોગી, વિષરોગી, ક્ષયરોગી, મધુમેહી રોગી એસે રોગીયોંકાં ઓર જનકે વ્રણમેં વશ્ય ઉત્પન્ન હો ગયા હો એસે મનુષ્યોંકાં વશ્ય અત્યન્ત કષ્ટસાધ્ય હે.

(૮૧) જલપાનમ્—જો મનુષ્ય નિત્ય રાત્રિકે અન્તમે વિધિપૂર્વક જલપાન કરતે હે જનકે આંસી, શ્વાસ, અતિસાર, જ્વર, કઠિરોગ, કુષ્ઠરોગ, મૂત્રાધાત, ઉદરરોગ, અર્શ, સૂજન, ખલરોગ, શિરોરોગ, શ્લેશ્મરોગ, નેત્રરોગ, વાત, પિત્ત, ક્ષય ઓર કફસે ઉત્પન્ન યે સખ રોગ નષ્ટ હો જાતે હે.

ચોગસારામૃત.

(૮૨) સતાવર, ગંજેરન, વિધારા, ઉટંગનકે બીજ, પુનર્નવા, ગિલોય, પીપલ, અમ્લ-ગંધ, ઓર ગોખરૂ યે પ્રત્યેક ચાલીસ તોલા લેકર ઇનકા બારિક ચૂર્ણ બનાવે, ફિર સખકા આધા ભાગ ખાંડ મિલાવે, સખકો ખૂબ મર્દનકર ફિર ઉસમેં ૧૨૮ તોલા સહત ઓર ૬૪ તોલા ઘૂત તથા, તજ, તેજપત્ર ઓર ધલાયચી ઇનકા ચૂર્ણ ચાર ચાર તોલા મિલાકર એક દૃઢ વાસન મેં બર રખે; રોગીકો અપની જઠરાશિકે બલાનુસાર ખાના ચાહિયે ઓર થથેજ ભોજન કરે, ઇસસે કુષ્ઠ, વાતરક્ત, પિત્ત તથા રૂધિરજન્ય સર્વ રોગોંકાં દૂર કરતા હે.

(૮૩) ગુડચીઘૂત મ્—ગિલોયકા ક્વાથ ઓર સોંઠકા કદક ડાલકર મૃદુ અગ્નિસે પકાય લી સિદ્ધ કરે, યહ ઘૂત કુષ્ઠ, વાતરક્તકો નાશ કરતા હે.

(૮૪) ગીલોય કફ તથા વાયુકો દરનેવાલી હે. કફ તથા મેદકો સુખાને વાલી હે. વાતરક્તકો કો સમન કરને વાલી, ખુજલી તથા વિસર્પકો દરને વાલી હે ઇસ લિયે ગિલોયકા ક્વાથ, સ્વરસ, કદકકો, ચૂર્ણકો અથવા સત્વકો બહુત દિનોં તક સેવન કરે તો કુષ્ઠ ઓર વાતરક્તસે મુક્તિ હોતી હે.

પંચનિમ્બકાવલેહ

(૮૫) નીમકા પંચાંગ—(ફલ, ફૂલ, છાલ પત્તે ઓર જડ પ્રત્યેક દો દો લોલે) લેકર બારિક ચૂર્ણ બનાવે ઇસ ચૂર્ણકો ભાંગેરે કે રસકી સાતગ્ગર ભાવના દેવે. હરડે, બહેડા, આંવલા, સોંઠ, મિરચ, પીપર, આલિ, ગોખરૂ, બિલાવા, ચિત્રક, વાયવિઙંગ, વરાહીકન્દ લોહચૂર્ણ, દોનોં હલ્દી, બાવચી, અમલતાસ, મિશ્રી, ફૂંડ, ઇન્દ્રજી ઓર પાઢ યે સખ સમાન ભાગ લેકર ચૂર્ણ કરલે, ઇસ ચૂર્ણકો, ખેર-વિજયસાર ઓર નીમ ઇનકે ગાઢ ક્વાથકી ભાવના દેવે. પશ્ચાત્ત ભાંગેરે રસકી કમાનુસાર સાત ભાવના દેવે, ફિર ઇસ હરડે આદિ ચૂર્ણકા એક ભાગ પૂર્વોક્ત, નિમ્બચૂર્ણકા દો ભાગ લેકર ઇન સખકો એકત્ર કરલે, ફિર શુભ દિન દેખ કર, વમન વિરેચન આદિસે શરીરકો શુદ્ધ કરકે, પશ્ચાત્ત રનેહન ક્રિયાસે સ્નિગ્ધ કરકે રસ અવલેહકા, સહત-પંચતિક્ત ઘૂતમેં, વા ખેરકે તથા વિજયસારકે ક્વાથમેં અથવા ગરમ જલકે સંગ ચાટે અથવા પાન કરે ઇસ પરહિત કારક અન્નકા ભોજન કરે, ઇસસે સર્વ પ્રકારકે કુષ્ઠ, ગણ્ડમાલા-વાતરક્ત, ભગન્દર ઓર સર્વ પ્રકાર પ્રમેહ-યે સખ ઇસ નિમ્બકાવલેહ સે નષ્ટ હોતે હે.

(૮૬) જો મનુષ્ય એક મહીને તક નિત્ય ભાંગરેકે રસકો પિયે ઓર દૂધ લાતકા બોજન કરે તો સમસ્ત રકતકે વિકાર નષ્ટ હોતે છે. શરીરમેં અત્યન્ત બલ બઢે.

સર્વાંગ સુન્દરી ગુટિકા.

(૮૭) એક સહસ્ત્ર બિલાવે, ત્રિફલા કે જલમેં ડાલે ઓર ૧૦૨૪ તોલે જલમેં પકાવે જળ ચૌથાઈ શેષ રહ જળ તળ ઉસે ૪૦ તોલા મિત્રી ડાલે, ૪ તોલા સોઝરદ્વજ લે ઓર ૪૦ તોલા ગૂઝલ ડાલે. ખરસાર, નીચકી છાલ, મજડ, બિજેરા, ઇન્દ્રાયન, ચિત્રક, દોનોં હલ્દી, હરડ, દેવદાર, ભારંગી, મહ સખ ઔષધી દો દો તોલા લે ઉપર કી ચાસનીમેં ડાલ કર બરાબર ગુટિકા તપ્પાર કરે. ઇસકો પ્રતિદિન બલકે અનુસાર ખાય ઓર પથ્થસે રહે તો સર્વ પ્રકારકે કુળોં કે દૂર કરે !

(૮૮) બાવચી, ગળાસત્વ દોનો કે સમભાગ લેકર સહત અથવા પાનીકી સંગ રાતકો સોને કે બકત સેવન કરે. માત્રા દોનોકી દો દો માસા લે.

(૮૯) બાવચી, અપામાર્ગ ક્ષાર, ભાંગરા, ચીત્રક, ઇનકો સમભાગ લેકર પાનીકી સાથ આધા ઘંટા ખુબ મહીન પીસકર સફેદ ચટ્ટો પર લેપ કરે. લેપ કરને કે દો દીન બાદ ચમડી ઉપર છાલે પડતે હેં. ઓર તીસરે દીન પાની નીકળતા હે. વો પાણી દુસરી જગા પર ન લગ જાવે અથવા દૂસરે મનુષ્યકો ન લગ જાય ઇસકા ખાસ ધ્યાન રખા જાવે. ઉપરકી સ્થિતિ આઠ દીન રહેતી હે ફિર અપને આપ નથી ચમડી આતી હે ઓર પૂરાની નીકળ જાતી હે. ઇસ આઠ દીન કે અરસે મે દવા લગાના બંધ કર દે ઓર રોગીકો આરામ કરને દે. ઇસસે ઇલાજ કરતા વૈદ્ય અથવા દરદી દોનોકું ગભરાને કી કોષ આવશ્યકતા નહીં, ફિરસે દવા લગાના શરૂ કરે. દૂસરી વખત ચટ્ટો ઉપર છાલે નહીં પડેગે, જળ તક ચમડીકા રંગ કુદરતી ચમડીમેં મીઠા ન જાય તળ તક દવા લગાના ઓર ખાના શુરૂ રખના ચાહીએ.

વૈદ્યકો ખાસ ચાદ રખનેકી બાત.

જીસ રોગીકા સર્વ શરીર સફેદ હો ગયા હોવે તો ઉસકે સખ શરીર ઉપર એક સાથ દવા નહીં લગાઇ જાય, એસા કરને સે રોગીકા મહાન કષ્ટ ભોગવના પડતા હે. ઓર દરદી કબી મર બી જાતે હેં. ઇસ લિયે એસે રોગીકે પહિલે ફિરસી એક અંગ પર દવા લગાઇ જાય, જળ વો અંગ ઠીક હો જાવે તળ દૂસરે અંગ ઉપર દવા લગાઇ જાય. સમય જાદા ખર્ચ હોગા પરંતુ શીઘ્રતા કબી ન કરે. કમ સે કમ ત્રીન માસ ઓર છ માસ દવા અવશ્ય હી સેવન કરની ચાહીએ. જીસ દરદીકો ૩૦-૪૦ વર્ષકો પુરાની બીસારી હોવે ઉસકો સાલ દો સાલ તક દવા સેવન કરાતે રહે. ઇસમેં ખાસ પથ્થ તેલ, ખટાસ, ગુડ ઓર બલચરસે રહેના. રૂતિ.

વૈદ્યરાજ એસ. એમ. શર્મા,
અમદાવાદ.

